03 अप्रैल, 2021

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

स्वराज, स्वराष्ट्र एवं स्व

- **सांची विश्वविद्यालय में आज़ादी का अमृत महोत्सव**
- **राष्ट्र, हिंद स्वराज और अध्यात्म पर परिचर्चा**

आज़ादी के अमृत महोत्सव के व्याख्यानों की कड़ी में आज सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में "स्वराज, स्वराष्ट्र एवं स्व" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इस व्याख्यान में भारतीय दर्शन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. नवीन दीक्षित ने स्वतंत्रता, स्वराज और राष्ट्र की संकल्पना पर बातचीत की।

डॉ. दीक्षित ने बताया कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय से ही 'राष्ट्र' का अर्थ रहा है-एक ऐसा देश जिसकी अपनी स्वतंत्र शासन प्रणाली हो, जो रियासतों में न बंटा हुआ हो और जो राजनीतिक, सामरिक व भौगोलिक दृष्टि से एक हो। डॉ नवीन दीक्षित का कहना था कि 1792 की फ्रांसिसी क्रांति ने पूरी दुनिया में वंशवादी शासन प्रणाली के स्थान पर लोकतांत्रिक शासन प्रणाली स्थापित किए जाने की चेतना उतपन्न की।

डॉ नवीन दीक्षित ने अपने व्याख्यान में बताया कि तत्कालीन शिक्षा के माध्यम से भी लोग जागृत हुए और स्वतंत्र राज्य की मांग करने लगे। 1909 में महात्मा गांधी ने "हिंद स्वराज" नाम की किताब लिखी जिसमें राष्ट्र की स्पष्ट संकल्पना की गई थी।

डॉ दीक्षित का कहना था कि गांधी जी के स्वराज की संकल्पना में मिल मालिक, मिल मज़दूर, महिला-पुरुष, बुद्धिजीवी, श्रमजीवी सभी एक हो गए थे। उन्होंने 'स्व' पर चर्चा करने के दौरान भारत के अध्यात्म व दर्शन का ज़िक्र भी किया। उनका कहना था कि मनुष्य अपने आप में ही एक आध्यात्मिक, दार्शनिक व धार्मिक प्रणाली है। उन्होंने न्याय वैशिष्ठ, मीमांसा दर्शन, सांख्य दर्शन, अद्वैत दर्शन, चारवाक दर्शन, बौद्ध मत व जैन मत में 'स्व' को व्याख्यायित किया और बताया कि इन कालों में भारत एक पूर्ण स्वराज था।

सांची विश्वविद्यालय में प्रत्येक सप्ताह आज़ादी के अमृत महोत्सव के आयोजनों के तहत व्याख्यानों का आयोजन किया जा रहा है। पूरे देश के साथ-साथ मध्य प्रदेश सरकार भी आज़ादी के 75 वर्ष होने पर आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रही है।

कृपया उक्त समाचार को आपके माध्यमों पर उचित स्थान प्रदाय करने का अनुरोध है।

दैनिक भास्कर रायसेन 04-04-2021

मनुष्य स्वयं आध्यात्मिक व धार्मिक प्रणाली हैः दीक्षित

सांची विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ आज़ादी का अमृत महोत्सव

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में आयोजित परिचर्चा में मौजूद लोग।

रायसेन| आज़ादी के अमृत महोत्सव के व्याख्यानों की कड़ी में आज सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में स्वराज, स्वराष्ट्र एवं स्व विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इस व्याख्यान में भारतीय दर्शन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. नवीन दीक्षित ने स्वतंत्रता, स्वराज और राष्ट्र की संकल्पना पर बातचीत की।

डॉ. दीक्षित ने बताया कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय से ही 'राष्ट्र' का अर्थ रहा है-एक ऐसा देश जिसकी अपनी स्वतंत्र शासन प्रणाली हो, जो रियासतों में न बंटा हुआ हो और जो राजनीतिक, सामरिक व भौगोलिक दृष्टि से एक हो। डॉ नवीन दीक्षित का कहना था कि 1792 की फ्रांसिसी क्रांति ने पूरी दुनिया में वंशवादी शासन प्रणाली के स्थान पर लोकतांत्रिक शासन प्रणाली स्थापित किए जाने की चेतना उतपन्न की।

डॉ. नवीन दीक्षित ने अपने व्याख्यान में बताया कि तत्कालीन शिक्षा के माध्यम से भी लोग जागृत हुए और स्वतंत्र राज्य की मांग करने लगे। 1909 में महात्मा गांधी ने "हिंद स्वराज" नाम की किताब लिखी जिसमें राष्ट्र की स्पष्ट संकल्पना की गई थी। डॉ. दीक्षित का कहना था कि गांधी जी के स्वराज की संकल्पना में मिल मालिक, मिल मजदूर, महिला-पुरुष, बुद्धिजीवी, श्रमजीवी सभी एक हो गए थे। उन्होंने 'स्व' पर चर्चा करने के दौरान भारत के अध्यात्म व दर्शन का जिक्र भी किया। उनका कहना था कि मनुष्य अपने आप में ही एक आध्यात्मिक, दार्शनिक व धार्मिक प्रणाली है।

उन्होंने न्याय वैशिष्ठ, मीमांसा दर्शन, सांख्य दर्शन, अद्वैत दर्शन, चारवाक दर्शन, बौद्ध मत व जैन मत में 'स्व' को व्याख्यायित किया और बताया कि इन कालों में भारत एक पूर्ण स्वराज था। सांची विश्वविद्यालय में प्रत्येक सप्ताह आज़ादी के अमृत महोत्सव के आयोजनों के तहत व्याख्यानों का आयोजन किया जा रहा है। पूरे देश के साथ-साथ मध्य प्रदेश सरकार भी आज़ादी के 75 वर्ष होने पर आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रही है।

पत्रिका 04.04.2021 Raisen

सांची विवि में व्याख्यान आयोजित

फ्रांसीसी क्रांति से मिली लोकतांत्रिक प्रणाली की चेतना

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायसेन. आजादी के अमृत महोत्सव के व्याख्यानों की कड़ी में शनिवार को सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में स्वराज स्वराष्ट्र एवं स्व विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

इस व्याख्यान में भारतीय दर्शन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. नवीन दीक्षित ने स्वतंत्रता, स्वराज और राष्ट्र की संकल्पना पर बातचीत की। डॉ. दीक्षित ने बताया कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय से ही राष्ट्र का अर्थ रहा है, एक ऐसा देश जिसकी अपनी स्वतंत्र शासन प्रणाली हो, जो रियासतों में न बंटा हुआ हो और जो राजनीतिक, सामरिक व भौगोलिक दृष्टि से एक हो। दीक्षित का कहना था कि 1792 की फ्रांसिसी र ांति ने पूरी दुनिया में वंशवादी शासन प्रणाली के स्थान पर लोकतांत्रिक शासन प्रणाली स्थापित करने की चेतना उत्पन्न की।

उन्होंने बताया कि तत्कालीन शिक्षा के माध्यम से भी लोग जागृत हुए और स्वतंत्र राज्य की मांग करने लगे। 1909 में महात्मा गांधी ने हिंद स्वराज नाम की किताब लिखी जिसमें राष्ट्र की स्पष्ट संकल्पना की गई थी।

गांधी जी के स्वराज की संकल्पना में मिल मालिक, मिल मजदूर, महिला, पुरुष, बुद्धिजीवी, श्रमजीवी सभी एक हो गए थे। उन्होंने स्व पर चर्चा करने के दौरान भारत के अध्यात्म व दर्शन का जिक्र किया। उनका कहना था कि मनुष्य अपने आप में ही एक आध्यात्मिक, दार्शनिक व धार्मिक प्रणाली है।

08 अप्रैल 2021

प्रेस विज्ञप्ति

सांची विश्वविद्यालय में शुरु होंगे नए पाठ्यक्रम

- सांची विश्वविद्यालय की विद्या परिषद में कई दूरगामी निर्णय
- नई शिक्षा नीति के अनुरूप कई पाठ्यक्रम होंगे शुरु
- ऑनलाइन कोर्सेस, स्ववित्त पोषित कोर्स, ट्रेनिंग सेंटर बनेंगे

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय की विद्या परिषद की बैठक में कई ऐतिहासिक निर्णय लिए गए। विश्वविद्यालय की नवागत कुलपति डॉ नीरजा ए गुप्ता की अध्यक्षता में हुई विद्या परिषद की बैठक में नई शिक्षा नीति के अनुरूप विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के पुनरीक्षण का निर्णय लिया गया। बैठक में विदेशी शिक्षा विभाग के अंतर्गत उज्बैक भाषा, फ्रेंच, स्पैनिश, जर्मन, सिंहली, जापानी भाषा में विभिन्न पाठ्यक्रम शुरु करने पर विचार हुआ। साथ ही एमए लिंग्विस्टिक, एमए ट्रांसलेशन, सबटाइटलिंग और डबिंग, एमए डाइसोपारा एवं माइग्रेशन स्टडीज, एमए इंटरनेशनल रिलेशंस जैसे नए पाठ्यक्रम शुरु करने के प्रस्ताव पर भी निर्णय लिया गया। बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान अध्ययन पर केंद्रित सांची विश्वविद्यालय अब एमएससी धर्म प्रैक्टिसेस, एमससी रिचुअल्स, एमएससी एस्ट्रो न्यूमेरिक नाड़ी शास्त्र एवं वास्तु शास्त्र, एमएससी थैरोपैटिक साइसेंस जैसे नए कोर्सेस भी शुरु करेगा। विश्वविद्यालय अब नियमित पीएचडी के साथ पार्ट टाइम पीएचडी भी शुरु करेगा।

सांची विश्वविद्यालय में वैकल्पिक शिक्षा आधारित विभिन्न पाठ्यक्रमों को भी विद्या परिषद ने स्वीकृति दे दी है। इसी के साथ पुरानी पांडुलिपियों के संरक्षण और मूल ग्रंथों के अनुरक्षण आदि पर केंद्रित लाइब्रेरी विभाग में भी विभिन्न पाठ्यक्रम शुरु किए जाएंगे। सांची विश्वविद्यालय देश विदेश के उद्भट विद्वानों को सम्मानित करने के लिए मानद उपाधि देने का निर्णय भी विद्या परिषद द्वारा लिया गया।

सांची विश्वविद्यालय में अध्यात्म और पुरानी लोक संप्रेक्षण तकनीकों पर आधारित पीजी डिप्लोमा इन मल्टीमीडिया एवं मॉसकॉम कोर्स एवं हैरिटेज पर केंद्रित पीजी डिप्लोमा इन हैरिटेज स्टडीज भी शुरु होगा। नई शिक्षा नीति पर केंद्रित 5 वर्षीय इंटीग्रेटेड पाठ्यक्रम भी शुरु किए जाएंगे। इसी परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को मान्यता के साथ SWAYAM आधारित पाठ्यक्रम भी शुरु होंगे।

विद्या परिषद ने नई शिक्षा नीति के संदर्भ में एमफिल कोर्स को समाप्त करने का भी निर्णय लिया। इसी के साथ विश्वविद्यालय को ट्रेनिंग एंड ओरिएंटेशन फेसिलिटेशन सेंटर बनाने का भी प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। परिषद ने नई शिक्षा नीति से संदर्भित सभी प्रकार के निर्णय लेने हेतु कुलपति महोदया को अधिकृत किया है।

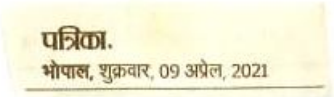
पत्रिका.
भोपाल, शुक्रवार, 09 अप्रैल, 2021

सांची विश्वविद्यालय में शुरू होंगे नए पाठ्यक्रम

नई शिक्षा नीति के अनुरूप ऑनलाइन कोर्सेस, स्ववित्त पोषित कोर्स, ट्रेनिंग सेंटर बनेंगे

रायसेन. सांची बौद्ध, भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय की विद्या परिषद की बैठक में कई ऐतिहासिक निर्णय लिए गए। विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. नीरजा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई विद्या परिषद की बैठक में नई शिक्षा नीति के अनुरूप विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के पुनरीक्षण का निर्णय लिया गया। बैठक में विदेशी शिक्षा विभाग के अंतर्गत उज्बैक, फ्रेंच, स्पैनिश, जर्मन, सिंहली, जापानी भाषा में विभिन्न पाठ्यक्रम शुरू करने पर विचार हुआ। साथ ही एमए लिंग्विस्टिक, एमए ट्रांसलेशन, सबटाइटलिंग और डबिंग, एमए डाइसोपारा एवं माइग्रेशन स्टडीज, एमए इंटरनेशनल रिलेशंस जैसे नए पाठ्यक्रम शुरू करने के प्रस्ताव पर भी निर्णय लिया गया। बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान अध्ययन पर केंद्रित सांची विश्वविद्यालय अब एमएससी धर्म प्रैक्टिसेस, एमससी रिचुअल्स, एमएससी एस्ट्रो न्यूमेरिक नाड़ी शास्त्र एवं वास्तु शास्त्र, एमएससी थैरोपैटिक साइसेंस जैसे नए कोर्सेस भी शुरू करेगा। विश्वविद्यालय अब नियमित पीएचडी के साथ पार्ट टाइम पीएचडी भी शुरू करेगा। विश्वविद्यालय में वैकल्पिक शिक्षा आधारित विभिन्न पाठ्यक्रमों को भी विद्या परिषद ने स्वीकृति दे दी है। इसी के साथ पुरानी पांडुलिपियों के संरक्षण और मूल ग्रंथों के अनुरक्षण आदि पर केंद्रित लाइब्रेरी विभाग में भी विभिन्न पाठ्यक्रम शुरू किए जाएंगे। सांची विश्वविद्यालय देश विदेश के विद्वानों को सम्मानित करने के लिए मानद उपाधि देने का निर्णय भी विद्या परिषद द्वारा लिया गया। हेरिटेज पर केंद्रित पीजी डिप्लोमा इन हैरिटेज स्टडीज भी शुरू होगा। नई शिक्षा नीति पर केंद्रित 5 वर्षीय इंटीग्रेटेड पाठ्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे।

09 अप्रैल 2021

प्रेस विज्ञप्ति

आजादी का अमृत महोत्सव में हिंदू अस्मिता बोध पर चर्चा

- "भारतीय राष्ट्रवाद" का यथार्थ "भू सांस्कृतिक राष्ट्रवाद" से उत्पन्न
- हिन्दुत्व "एक जातीय, सांस्कृतिक और राजनैतिक" पहचान- डॉ सावरकर
- विचार करने की आवश्यकता कि हम गुलाम क्यों हुए-डॉ विश्वबंधु

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता संग्राम एवं हिंदू अस्मिता पर संगोष्ठी संपन्न हुई। आजादी के 75 साल के उत्सव के अंतर्गत 75 हफ्तें तक चलने वाले कार्यक्रमों की कड़ी में डॉ विशवबंधु ने स्वतन्त्रता संग्राम में "हिन्दू अस्मिता-बोध" के महत्त्व को रेखांकित किया।

डॉ विशवबंधु ने स्वतत्रंता संग्राम में "हिन्दू अस्मिता-बोध" के महत्त्व को रेखांकित करते हुए बताया कि स्वतत्रता संग्राम ने अपनी संकल्पना "स्वदेशी राष्ट्रीय भावना" से ही प्राप्त की थी। "स्वदेशी राष्ट्रीय भावना" शब्द "भारतीय राष्ट्रवाद" को सन् ईस्वी 1789 में फ्रांसीसी क्रान्ति में सशक्त रूप से उभरे "राष्ट्रवाद" से पृथक् करती है। "भारतीय राष्ट्रवाद" का यथार्थ "भू सांस्कृतिक राष्ट्रवाद" शब्द से प्रकट होता है । और इसी से ही "बृहत् भारत" की परिकल्पना मूर्त्त रूप लेती है ।

वीर विनायक दामोदर सावरकर के द्वारा सन् ईस्वी 1923 में "Essentials of Hindutva" पुस्तक में "हिन्दुत्व" की अवधारणा का प्रतिपादन किया । उनके द्वारा हिन्दुत्व को "एक जातीय, सांस्कृतिक और राजनैतिक" पहचान के तौर पर प्रतिपादित किया गया । हिन्दु राष्ट्रवाद का जो सर्वाङ्ग सम्पूर्ण दर्शन हमारे सामने वीर सावरकर ने रखा, उसके बीज 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में "हिन्दु पुनर्जागरण" में मिलते है ।

19 वीं शती में "हिन्दू अस्मिता" के उत्प्रेरक नभगोपाल मित्र, राजनारायण बसु, बंकिम चन्द्र चटर्जी तथा बाल-पाल-लाल की तिगडी की रचनाओं का जिक्र किया गया ।

वरिष्ठ वक्ता डॉ नवीन मेहता ने अखंड भारत की संकल्पना व्यक्त करते हुए कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ प्रभाकर पांडे ने किया।

07 पत्रिका

भोपाल, शनिवार, 10 अप्रेल, 2021

patrika.com

हिंदू अस्मिता बोध पर की चर्चा

सांची यूनिवर्सिटी में हुआ अमृत महोत्सव के तहत आयोजन

रायसेन. आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत सांची बौद्ध, भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता संग्राम एवं हिंदू अस्मिता पर संगोष्ठी हुई। जिसमें डॉ. विश्वबंधु ने स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दू अस्मिता बोध के महत्व को रेखांकित किया।

उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता संग्राम ने अपनी संकल्पना स्वदेशी राष्ट्रीय भावना से ही प्राप्त की थी। स्वदेशी राष्ट्रीय भावना शब्द भारतीय राष्ट्रवाद को 1789 में फ्रांसीसी क्रांति में सशक्त रूप से उभरे राष्ट्रवाद से अलग करती है। भारतीय राष्ट्रवाद का यथार्थ भू सांस्कृतिक राष्ट्रवाद शब्द से प्रकट होता है। इसी से ही वृहत भारत की परिकल्पना मूर्त्त रूप लेती है। वीर विनायक दामोदर सावरकर के द्वारा 1923 में हिन्दुत्व की अवधारणा का प्रतिपादन किया। उनके द्वारा हिन्दुत्व को एक जातीय, सांस्कृतिक और राजनैतिक पहचान के तौर पर प्रतिपादित किया गया। हिन्दू राष्ट्रवाद का जो सर्वाङ्ग सम्पूर्ण दर्शन हमारे सामने वीर सावरकर ने रखा, उसके बीज 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हिन्दू पुनर्जागरण में मिलते हैं। वरिष्ठ वक्ता डॉ. नवीन मेहता ने अखंड भारत की संकल्पना व्यक्त करते हुए कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन किया। संचालन डॉ. प्रभाकर पांडे ने किया।

13 अप्रैल 2021

प्रेस विज्ञप्ति

सांची विश्वविद्यालय में कोरोना टीकाकरण जागरुकता अभियान

- कुलपति महोदया ने टीकाकरण हेतु की अपील
- समस्त स्टॉफ, छात्रों को परिवार में टीका लगवाने का प्रोत्साहन
- गोद लिए गांव बिल्हारा, बारला में टीकाकरण जागरुकता

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय ने राज्यपाल महोदया की अपील पर कोरोना टीकाकरण अभियान में सक्रिय भागीदारी की है। कुलपति डॉ नीरजा ए गुप्ता ने विवि के समस्त शिक्षकगण एवं स्टॉफ को मय परिवार, छात्रों और उनके परिजनों को वैक्सीन लगवाने हेतु निर्देशित किया गया। कुलपति महोदया ने टीकाकरण हेतु योग्य लोगों को वैक्सीन लगवाने हेतु विवि द्वारा गोद लिए गांव बिल्हारा और बारला में घर-घर जाकर अपील की।

राज्यपाल महोदया के निर्देश पर सांची विश्ववविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गांव बिल्हारा में ग्रामीणों को टीकाकरण केंद्र तक लोगों को ले जाने की व्यवस्था भी की गई। बारला अकादमिक परिसर एवं सांची के आसपास भी टीकाकरण हेतु लोगों को जागरुक करने के लिए विवि टीम ने दौरा किया।

विवि में अध्ययनरत सभी छात्रों को अपने -अपने परिजनों को जो टीका हेतु आयुसीमा में आते हैं उन्हें टीका लगवाने हेतु छात्रों को पहल करने की अपील की गई। टीकाकरण से जुड़ी पूरी जानकारी की रिपोर्ट राज्यपाल महोदय को प्रेषित की गई। सांची विवि लगातार टीकाकरण के प्रति जागरुकता फैलाने एवं वैक्सीन से जुड़े सवालों के जवाब देने के लिए मोबाइल टीम बनाकर विवि परिसर के आसपास के 12 गांव में कार्य कर रहा है। इस कार्य हेतु सांची विवि के कुलसचिव श्री अदिति कुमार त्रिपाठी ने भी पूरे कार्य की निगरानी और फील्ड पर व्यवस्था का जायजा लिया।

14 अप्रैल 2021

प्रेस विज्ञाप्ति

सांची विश्वविद्यालय टीम ने टीका उत्सव हेतु किया जागरुक

- कुलपति डॉ नीरजा गुप्ता ने की टीका लगवाने की अपील
- सांची, सलामतपुर और दीवानगंज में जागरुकता अभियान
- लोगों को टीका लगवाने हेतु समझाइश, टीका केंद्र पहुंचाया

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा कोरोना से बचने हेतु टीका उत्सव में भागीदारी की गई। कुलपति डॉ नीरजा ए गुप्ता ने अगुवाई करते हुए सलामतपुर एवं सांची में लोगों को टीकाकरण हेतु जागरुक किया। विश्वविद्यालय द्वारा अलग-अलग टीम बनाकर सांची, सलामतपुर और दीवानगंज में लोगों को कोरोना वैक्सीन के प्रति जागरुक किया गया।

विवि के मेडिकल स्टॉफ की अगुवाई में सांची, सलामतपुर और दीवानगंज के टीका केंद्रों में जागरुकता अभियान चलाया गया। इस दौरान ग्रामीणों की शंकाओं का समाधान किया गया एवं कोरोना से बचाव हेतु वैक्सीन के फायदे गिनाए। कुछ ग्रामीण अंधविश्वास के चलते टीका लगवाने के अनिच्छुक थे उनको समझाइश देकर वैक्सीन लगवाने हेतु प्रेरित किया गया।

सांची विवि के छात्र भी कोरोना के प्रति जागरुकता में अलग-अलग तरीकों से योगदान कर रहे हैं। कुछ छात्रों ने पेटिंग एवं वॉलपेपर बनाए है वहीं कुछ ने कविता एवं नारे लिखकर जागरुकता फैलाई है। कुछ छात्र अपने अपने घरों के आसपास लोगों को वैक्सीनेशन के लिए जागरुक भी कर रहे हैं।

विवि के समस्त स्टॉफ को मय परिवार, छात्रों और उनके परिजनों को वैक्सीन लगवाने हेतु पूर्व में ही निर्जा चुका है। विवि में अध्ययनरत सभी छात्रों को अपने -अपने परिजनों को जो टीका हेतु आयुसीमा में आते हैं उन्हें टीका लगवाने हेतु छात्रों को पहल करने की अपील की गई। सांची विवि लगातार टीकाकरण के प्रति जागरुकता फैलाने एवं वैक्सीन से जुड़े सवालों के जवाब देने के लिए मोबाइल टीम बनाकर विवि अकादमिक परिसर के आसपास के माखनी, बारला, बिलारा, सलामतपुर, सांची, ढकना-चपना, मुक्तापुर समेत 15 गांव में कार्य कर रहा है।

प्रेस विज्ञप्ति **14.04.2021**

सांची विश्वविद्यालय में अम्बेडकर जयंती के आयोजन

- दलित, अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक शब्द अंग्रेजों की देन

-डॉ आंबेडकर की ग्रंथावली का अध्ययन ज़रूरी

- बाबा साहब स्वतंत्रता का अर्थ सामाजिक स्वतंत्रता बताते थे

-महिलाओं को संपत्ति में अधिकार की पहल डॉ अम्बेडकर ने की थी

बाबा साहेब अंबेडकर की 130वी जयंती पर सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर कुलपति डॉक्टर नीरजा गुप्ता ने कहा कि अंबेडकर ग्रंथावली और उनकी लिखी डायरी पढ़ने से उनके विचार जानने को मिलेंगे। जिसके लिए ज़रूरी है कि मूल तक जाकर विचार खड़ा किया जाय।

उनका कहना था कि दलित शब्द अंग्रेज लेकर आए थे,अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक भी हमारे शब्द नहीं हैं बल्कि अंग्रेजों की देन हैं। जबकि बाबा साहेब ने तो वो पाबंदियां हटाने पर जोर दिया जिसे अंग्रेजों ने लगवाया था। उन्होंने कहा कि डॉ अंबेडकर भारतीयता के बड़े पैरोकार थे।

इस मौके पर संस्कृत विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ विश्वबंधु ने कहा कि डॉ अंबेडकर द्वारा संस्कृत को भारत की आधिकारिक भाषा बनाने हेतु संविधान सभा समेत अन्य प्रयास किये गए थे।

बौद्ध अध्ययन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ रमेश रोहित ने बताया कि डॉ अंबेडकर बचपन में संस्कृत ना पढ़ पाने से व्यथित थे।

भारतीय दर्शन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ नवीन दीक्षित ने दलित समाज को मुख्यधारा में जोड़कर समतामूलक समाज की स्थापना के प्रयासों पर दृष्टि डाली।

उन्होंने बताया कि डॉ अंबेडकर ने महिलाओं को संपत्ति में समानता का अधिकार हेतु पहल की थी। उन्होंने बताया कि डॉ अंबेडकर स्वतंत्रता का अर्थ सामाजिक आजादी को बताते थे। उन्होंने अंग्रेजों के बनाये पैमाने पर सामाजिक भेदभाव का विरोध किया।